अध्याय-8

शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में लीडर्स व महत्वपूर्ण संस्थाओं का योगदान एवं कार्य

1. गट्स मट्स (Guts Muts)- (1759-1839) इन्हें जिम्नास्टिक का ग्रेंडफादर कहा जाता है। ये जर्मनी के रहने वाले थे। इन्होंने जिम्नास्टिक जो कि ऊँचे स्थान पर था। में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया तथा इसमें खेल व तैराकी को शामिल किया। उनका प्रोग्राम इतना कामयाब हुआ कि लोग अपने बच्चों को इनमें भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने लगे। उनके साथ अन्य लीडर्स ने मिलकर यह जोर दिया कि गणित और भाषा की तरह खेल विज्ञान को लोकप्रियता दी जाये। 1860 में खेल विज्ञान को अनिवार्य विषय के रूप में शुरू किया गया। गट्स मट्स ने कई किताबें लिखी जिनमें प्रमुख हैं।

1. युवाओं के लिये जिमनास्टिक
2. खेल

उनके विचार शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम को लेकर निम्न थे :-

1. जिम्नास्टिक की थ्योरी व प्रैक्टिकल का मूल शरीर क्रिया विज्ञान व चिकित्सा विज्ञान से होना चाहिये।
2. खेल व तैराकी को जिमनास्टिक में महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिये।
3. महिलाओं को हल्की जिमनास्टिक में भाग लेना आवश्यक है जिससे उनकी शारीरिक क्षमता व लचीलापन बढ़ सके।
4. एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के लिये मन व शरीर दोनों का विकास होना अत्यन्त आवश्यक है।

पर हेनरीलिंग (Per Henrik Ling)- (1776-1839) शारीरिक विज्ञान के इतिहास में Per Henrik Ling का नाम सबसे ऊपर आता है। इन्होंने जिम्नास्टिक का एक ऐसा ढंग अपनाया जिसे स्वीडिश जिमनास्टिक कहते हैं जिसे बाद में अमेरिका ने भी अपनाया। Ling की वैज्ञानिक सोच के आधार पर Anatomy व Physiology को भी खेलकूद गतिविधियों में लगाया। उन्होंने नये उपकरण जैसे स्टालबार, रिंग, रस्से आदि खेलों में जोड़े। उन्होंने खेल को जरूरी कहा। सही मुद्रा तथा शरीर को ठीक तरीके से ले जाने में उसने स्वीडिश जिम्नास्टिक करने का सुझाव दिया। शारीरिक शिक्षा क्षेत्र में पी.एच. लिंग का सबसे महत्वपूर्ण कार्य, कार्यक्रम को शरीर रचना पर आधारित करना था। उनका मानना था कि-

1. शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम दुर्बल व्यक्ति के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति के लिये।
2. एक ग्रुप अथवा समूह के लिये एक व्यायाम निश्चित करने के बजाय उस समूह के सभी व्यक्तियों के लिये उनकी शारीरिक आवश्यकता के अनुसार भिन्न-भिन्न व्यायाम निश्चित करने चाहिये।
3. व्यायाम शरीर पर होने वाले प्रभाव के आधार पर निश्चित करने चाहिए।
4. शारीरिक शिक्षक को प्रत्येक व्यायाम के उद्देश्य की जानकारी होनी चाहिये और प्रत्येक व्यायाम का उद्देश्य शारीरिक पूर्णता की ओर होना चाहिये।

फ्रेड्रिक लुडविक जॉन (Fredrik Ludwik John)- श्री जॉन प्रशिया (जर्मनी) के रहने वाले थे। बाल्यावस्था में अत्यधिक यात्रा करने के कारण उनकी शैक्षणिक प्रगति विशेष न हो सकी परन्तु यात्रा से उन्हें ऐसे अनुभव हुए जिसका प्रभाव उनके कार्यक्रम पर है। वे जीवन-पर्यन्त जर्मनी एकता के लिये प्रयत्नशील रहे। वे किसी राजनीतिक संस्था के सदस्य नहीं थे केवल देश भक्ति और राष्ट्रीय भावना से प्रभावित हो कर कार्य करते रहे।

1813 में जब प्रशिया की स्वतंत्रता के लिये जॉन ने सर्वप्रथम अपनी सेवाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं तो उसकी अनुपस्थिति में इसकी संस्था का कार्य शासकीय सहायता से 'ऐजलन' की देखरेख में चलता रहा। उनका लक्ष्य था सभी जर्मनभाषी राज्यों को मिलाकर एक जर्मन देश की स्थापना करना। खेल सामाजिक एकता लाने के लिये बहुत उपयोगी है। इनके कार्यक्रम में भाग लेने वालों को विशेष प्रकार का भोजन लेना, बच्चों के लिये आदर्श स्थापित करना तथा उच्चकोटि का चरित्र रखना आवश्यक समझा जाता था। उस काल के शारीरिक शिक्षा विशेषज्ञों ने जॉन का विरोध किया। उनके अनुसार जॉन के विचार सीमित मनोविज्ञान व शरीर रचना पर आधारित नहीं थे। इनमें लड़कियों के शारीरिक विकास पर ध्यान नहीं दिया गया था। राष्ट्रीय भावना व देशभक्ति के कारण जन-साधारण में जॉन के कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हुए।

पी. एम जोसेफ (P.M. Joseph)- (1904-1999)- डॉ. पी. एम. जोसेफ ने भारत में शारीरिक शिक्षा को एक नई दिशा दी। आजादी के पश्चात् डॉ. पी एम जोसेफ को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सन् 1957 ई. में ग्वालियर में लक्ष्मीबाई कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन संस्थापक प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया। अपने अथक प्रयासों से शारीरिक शिक्षा को खेलकूद के साथ एक वैज्ञानिक विषय के रूप में परिभाषित किया। डॉ. जोसेफ उन अग्रणी प्राचार्यों में एक हैं जिन्होंने इस विषय को पूरे भारत में स्थापित किया व खेल-कूद से अलग एक नयी पहचान दिलायी। उनके अथक प्रयासों व संस्थान की सफलता और बढ़ती क्षमता हेतु भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से नवाज़ा।

एच.सी.बक (1884-1943)- आजादी के पहले भारत में शारीरिक शिक्षा को एक नया एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने का श्रेय डॉ. एच.सी. बक को जाता है। भारत

में वाई.एम.सी.ए. के आने पश्चात एच.सी. बक ने 1920 ई. में वाई.एम.सी.ए. कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन, मद्रास (चेन्नई) की स्थापना की। इससे पूर्व शारीरिक शिक्षा केवल खेल के मैदानों एवं अखाड़ों तक ही सीमित हुआ करती थी और इस शिक्षा हेतु लोगों को अधूरी जानकारी तक ही सीमित रहना पड़ता था। एच.सी. बक ने प्रशिक्षित शिक्षक तैयार किये। इसके अतिरिक्त भारत में पश्चिमी खेलों को स्थापित करने, प्रचार एवं प्रसार का श्रेय भी आपको जाता है। इन्होंने जिन खेलों को मुख्य रूप से स्थापित किया उनमें हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबाल, बास्केटबाल इत्यादि है।

निम्न संस्थाओं के लक्ष्य एवं कार्य

1. नेता जी सुभाष इंस्टिट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स पटियाला (NSNIS Neta ji Subash National Institute of Sports) 1961

राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान, पटियाला की स्थापना 1961 में भारत सरकार द्वारा खेलकूद में प्रशिक्षकों को उच्च स्तरीय तकनीकी प्रशिक्षण उपलब्ध करवाने के लिये की। अखिल भारतीय खेल परिषद और तदर्थ जांच समिति 1958 की अनुशंसा पर भारत सरकार द्वारा 1961 में मोती बाग महल, पटियाला में नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान स्थापित किया गया।

ध्येय एवं उद्देश्य (aims and objectives)- संस्थान की स्थापना का प्राथमिक अभिप्राय सभी खेलों में प्रथम श्रेणी प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देना था, जो युवा पुरुषों और महिलाओं को उनके अपने खेल में उत्कृष्टता लाने में सहायता करेंगे। इसका अभिप्राय यह भी था कि सामान्य जनता में खेल मानसिकता उत्पन्न हो और खेलकूद में भाग लेने को बढ़ावा दिया जा सके।

1. उच्चतम योग्यता प्राप्त प्रशिक्षकों को तैयार करना और कार्यरत प्रशिक्षकों की तकनीकी क्षमता का विकास करना।
2. ऐसे केन्द्र के रूप में सेवा, जहाँ से खेलकूद से सम्बन्धित अधिकतम सम्भव सूचनाएँ एकत्रित हो सकें।
3. उत्तरदायी खेल निकायों का खेलकूद में सामान्य स्तर ऊपर उठाने का कार्य विशेष ज्ञान के साथ खेल शिक्षक उपलब्ध कराकर और विस्तार सेवा के माध्यम के साथ-ही-साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिये खिलाड़ियों और टीमों को प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में सुविधाओं के उपयोग को उपलब्ध कराना, सम्पूर्ण कराना।
4. देश में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों को खेलकूद के क्षेत्र में आवश्यक तकनीकी कर्मचारी उपलब्ध कराना।
5. चरित्र के विकास और नेतृत्व के लिये प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना।

क्षेत्र, स्थिति और भवन एवं खेल मैदान

नेता जी सुभाष राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान, पटियाला के एच.एच. महाराधिराज के पुराने निवास 'मोतीबाग महल' में स्थित है, इसमें विस्तृत और सुव्यवस्थित सुन्दर बाग, भव्य आलीशान भवन के साथ 300 एकड़ भूमि क्षेत्र है। इसका मुख्य भवन पार्क के मध्य और अन्य दिशाओं में छात्रावास और वर्तमान व भविष्य के विस्तृत विकास की सुविधा है। यह संस्थान रेलवे स्टेशन से 2 मील की दूरी पर और राष्ट्रीय मार्ग से जुड़ा हुआ है।

संस्थान में पर्याप्त खेल मैदान जैसे- क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबाल, बास्केटबाल, टेनिस, गोल्फ, एथलेटिक्स ट्रैक, सायकिलिंग बैलोड्राम, तरणताल, जिम्नेजियम, कुश्ती, जूडो एवं मुक्केबाजी हाल, वेटलिफ्टिंग हाल, सोनाबाथ, बैटमिन्टन और टी.टी. हाल आदि आधुनिक तकनीक एवं साज-सज्जा से सुसज्जित उपलब्ध है। छात्रों, खिलाड़ियों व अधिकारियों के रहने के लिए पर्याप्त और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास हैं। संस्थान में प्रयोगशाला, अनुसंधान उपकरण, खेल साहित्य का पुस्तकालय भवन, खेल चिकित्सालय एवं विद्युतीय उपकरणों से सुसज्जित चिकित्सालय आदि सभी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

सम्बद्धता और मान्यता (Affiliation and Recognition)- संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न खेलों के सभी पाठ्यक्रम डिप्लोमा खेल प्रशिक्षण, स्नातकोत्तर उपाधि, खेल प्रशिक्षण, प्रमाण पत्र पाठ्य क्रम, खेल प्रशिक्षण, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आदि सभी पाठ्यक्रमों के लिए संस्थान सम्पूर्ण स्वशासी एवं भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है।

संस्थान द्वारा 1983 से खेल विज्ञान संकाय की स्थापना की गई और इस संकाय द्वारा बाद में एक वर्ष का स्नातकोत्तर पत्रापाधि खेल चिकित्सा पाठ्यक्रम पटियाला में औषधि चिकित्सकों के लिये प्रारम्भ किया गया। आज इस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष है और ये पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला से सम्बद्ध और मेडिकल कौंसिल ऑफ इण्डिया से मान्यता प्राप्त है।

2. स्पोर्ट्स एथोरिटी ऑफ इंडिया एस.ए. आई. (Sports Authority of India)-

भारतीय खेल प्राधिकरण यानि स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (SAI) की स्थापना 1982 में नई दिल्ली में हुए नौंवे एशियाई खेलों के बाद हुई। इसकी स्थापना देश में खेलों को प्रोत्साहन देने के लक्ष्य से हुई थी। 'साई' देश में खेलों को प्रोत्साहन देने वाली शीर्ष संस्था है। आम सभा के मुखिया इसके अध्यक्ष होते हैं जो तत्कालीन प्रधानमंत्री होते हैं। साई की कार्यकारिणी सभा के मुखिया मानव संसाधन मंत्रालय के मंत्री होते हैं और केन्द्रीय युवा और खेल राज्यमंत्री इसके उपाध्यक्ष होते हैं।

भारतीय खेल प्राधिकरण के लक्ष्य (objectives of S.A.I)

1. खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन व विकसित करना और भारत सरकार की खेल नीति के अनुसार देश के खेलों के स्तर बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनाना और

उन्हें लागू करना।

2. समय-समय पर शुरू की गई योजनाओं को लागू करना व चल रही योजनाओं को पूर्ण करना।
3. खेल व क्रीड़ाओं और सम्बन्धित विज्ञान में शोध व विकास को बढ़ावा देना।
4. दिल्ली व देश के अन्य भागों में जहाँ स्टेडियम हैं अलग से खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, अधिकारियों आदि के लिये आवासीय सुविधाओं के लिये योजना बनाना, विकास एवं प्रबन्धन करना।
5. टूर्नामेन्टों, प्रशिक्षण शिविरों, प्रदर्शनी मैचों और अन्य खेल गतिविधियों के लिये सुविधाएँ जुटाना, योजना बनाना व उनका प्रबन्धन करना।
6. राज्य सरकार से सहयोग व तालमेल करना व खेल संगठनों व फेडरेशन के साथ सहयोग करना।
7. देश में खेल उपकरणों के बारे में शोध के लिये पहल करना, उसे प्रायोजित और उत्साहित करना।
8. खेलों के लिये बड़े पुरस्कार, सम्मान, छात्रवृत्तियाँ और अन्य वज़ीफों की पेशकश करना व उन्हें लागू करना।
9. भारत सरकार की पूर्वानुमति लेकर चल-अचल सम्पत्ति को खरीदना, पट्टे या किराये पर लेना, बेचना, गिरवी रखना हस्तांतरित करना या उसे समाप्त कर देना।
10. खेल के स्तर पर सुधार और खेलों को बढ़ावा देने सम्बन्धी सभी मामलों पर भारत सरकार, राज्य सरकार को सलाह देना और उसे पूरा करना।

भारतीय खेल प्राधिकरण के कार्य (Functions of sport Authority of India)- साई के कार्य निम्नलिखित कार्यात्मक खंडों की देख-रेख में होते हैं जिनका मुखिया एक कार्यकारी निदेशक होता है-

विंग का नाम	कार्यालय
1. अकादमिक (शैक्षिक)	(क) नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स, पटियाला।
	(ख) लक्ष्मीबाई नैशनल कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, त्रिवेंद्रम।
2. वित्त	
3. संचालन	कार्पोरेट आफिस पर स्थित
4. कार्मिक एवं सतर्कता	नयी दिल्ली
5. स्टेडियम	,, ,,
6. टीमें	,, ,,

साई को चार कार्यात्मक खंडों में बाँटा गया है।

1. अकादमिक शैक्षिक खण्ड (Academic Wing)

इसमें दो खंड हैं-

(क) खेलों के लिये अकादमिक खंड

(ख) शारीरिक शिक्षा के लिये अकादमिक खंड

(क) खेलों के लिये अकादमिक खण्ड (Academic Wing for sports)- यह पटियाला में है व **NSNIS** के नाम से जाना है। यह निम्न सुविधाएँ उपलब्ध कराता है।

1. प्रशिक्षक का प्रशिक्षण ले रहे खिलाड़ियों को एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स।
2. स्पोर्ट्स कोचिंग में दो वर्षीय मास्टर्स कोर्स।
3. स्पोर्ट्स मेडिसिन में दो वर्षीय डिप्लोमा कोर्स।
4. शारीरिक शिक्षा अध्यापकों के लिये छह सप्ताह सर्टीफिकेट कोर्स और सेवारत प्रशिक्षकों के लिये पुनश्चर्या पाठ्यक्रम।
5. खेल योजनाएँ प्रस्तुत कर उन्हें लागू करना जैसे खेल प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना, अखिल भारतीय ग्रामीण खेल टूर्नामेंट इत्यादि।

(ख) शारीरिक शिक्षा के लिये अकादमिक खंड (Academic Wing for physical Education)- शारीरिक शिक्षा और शोध के लिये यह खंड त्रिवेन्द्रम में स्थापित है और लक्ष्मीबाई नेशनल कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन (LNCPE) के रूप में जाना जाता है। यह कॉलेज भारत सरकार ने 17 अगस्त 1985 को इस उद्देश्य से स्थापित किया ताकि देश में शारीरिक शिक्षा व खेलों के लिये अधिक सुविधाएँ मुहैया करायी जा सकें। यह केरल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। यह चार वर्ष की बैचलर डिग्री और दो वर्षीय मास्टर्स डिग्री करवाता है।

2. संचालन खंड- इस खंड में तीन डायरेक्टेट हैं। (i) डायरेक्टोरेट ऑफ स्पोर्ट्स प्रमोशन इन एजुकेशन सेक्टर (SPEA) (ii) स्पेशनल एरिया गेम (SAG) (iii) ढाँचागत

पहले दो डायरेक्टोरेट विभिन्न आयु वर्गों में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के तहत युवा खेल प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें तैयार करते हैं। तीसरा डायरेक्टोरेट ढाँचागत का कार्य पूँजीगत कार्यों को अंजाम देता है। विभिन्न स्पर्धाओं के लिये कृत्रिम या सिंथेटिक तल तैयार करवाना जैसे- जिम्नेजियम कॉम्पलेक्स, तैराकी, बॉक्सिंग एवं जूडो हाल, छात्र-छात्राओं के छात्रावास, प्रशासनिक भवन आदि बनवाना।

3. स्टेडिया खंड (Stadia Wing)- 1982 में नयी दिल्ली में आयोजित हुए नौवें एशियाई खेलों के लिये भारत सरकार ने निम्न स्टेडियमों का निर्माण/पुनर्निर्माण कराया और 'साई' को इनके रख-रखाव व उपयोगिता का जिम्मा सौंपा गया।

1. जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम	1. नैशनल स्टेडियम
3. तालकटोरा स्विमिंग पूल	4. इंदिरा गांधी स्टेडियम

5. साइकलिंग बेलोड्रोम 6. डॉ. करणी सिंह शूटिंग रेंज

4. टीम खण्ड (Team Wing)- इस खंड के अन्तर्गत टीम संचालन मंडल, उपकरण संभालना और डोप कंट्रोल लैब आते हैं।

(i) टीम संचालन मंडल- इसका दायित्व है उत्कृष्ट खिलाड़ियों को राष्ट्रमंडल खेलों, एशियाई खेलों व ओलम्पिक खेलों जैसी अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं के लिये दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण देना। विदेशी प्रशिक्षकों की तैनाती, विदेशी दौरे इत्यादि का संचालन करता है।

(ii) उपकरण संभरण संचालन मंडल- उपकरणों का आयात करती है जो राष्ट्रीय टीमों के प्रशिक्षण के लिये आवश्यक होते हैं। यह मंडल खेल उपकरण निर्माता कम्पनियों से अनुबंध रेटों को अंतिम रूप देता है।

(iii) मादक द्रव्य नियंत्रण संचालन मंडल- मादक द्रव्य नियंत्रण प्रयोगशाला का संचालन मंडल/निदेशालय जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में स्थित है। इसका उद्देश्य प्रतिबंधित दवाओं का सेवन करने वाले खिलाड़ियों का पता लगाना है।

एस.ए.आई. के क्षेत्रीय केन्द्र (Regional Centres of S.A.I.)- भारतीय खेल प्राधिकरण के छह क्षेत्रीय केंद्र हैं जिनके मुख्यालय बंगलौर, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गांधीनगर और इम्फाल में स्थित है।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (International olympic committee)- यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जो आधुनिक ओलम्पिक खेलों का नियंत्रण करती है। इसका गठन 25 जून 1894 को पेरिस में हुआ। पहली समिति के 15 सदस्यों का चुनाव बैरन डी काबर्टिन द्वारा किया गया था। इसका मुख्यालय लुसाने (स्विट्जरलैंड) में है। भारत के सर जमशेदजी टाटा, प्रोफेसर जी.डी. सोंधी और राजा भलिन्दर सिंह को क्रमशः 1920 और 1947 में आई.ओ. सी. का सदस्य बनने का सम्मान मिला है।

समिति का संक्षिप्त स्वरूप- इसमें एक अध्यक्ष, दो उपाध्यक्ष कार्यकारी बोर्ड जिसमें सात सदस्य होते हैं एवं एक महासचिव होता है जो कार्यकारी बोर्ड द्वारा चुना जाता है।

कार्यकारी बोर्ड के कार्य

1. अन्तर्राष्ट्रीय फेडरेशन और ओलम्पिक समितियों का सम्मेलन आयोजित करना एवं वार्षिक रिपोर्ट तैयार करना।
2. आई.ओ.सी. में नये सदस्यों को मनोनीत करने के लिये उनके नामों की सिफारिश करना।
3. सभी वित्तीय मुद्दों का नियंत्रण।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के कार्य (Functions of International olympic committee)

1. ओलम्पिक खेलों के लिये स्थान का चयन करना और तिथियों का निर्धारण करना।
2. ओलम्पिक के आम कार्यक्रमों के लिये नियम बनाती है व उनका नियमन करती है। खेल के तकनीकी पहलू अन्तर्राष्ट्रीय फेडरेशन पर छोड़ दिये जाते हैं।

इसके अलावा आई.ओ.सी. निम्न कार्यक्रम बनाती है जिसे राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियाँ और खेल संगठन लागू करते हैं।

(i) ओलम्पिक दिवस/सप्ताह समारोह दिशा निर्देश के अनुसार इसे अगस्त माह में मनाया जाय। इसमें ओलम्पिक इतिहास, दर्शन पर चर्चा और विभिन्न खेलों में मुकाबले आयोजित कराये जायें।

(ii) ओलम्पिक भावना- प्रदर्शन और नये रिकार्डो पर ज्यादा बल न दे कर एमच्योर स्पोर्ट्स के गुणों, सामाजिक शिक्षा सौंदर्य, नैतिकता और आध्यात्मिकता पर बल देना चाहिये।

भारतीय ओलम्पिक संघ (Indian olymipic Association)- भारतीय ओलम्पिक संघ 1927 में बनाया गया। श्री दोराबजी जमशेज जी टाटा इसके पहले अध्यक्ष थे। यह अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति से सम्बद्ध है।

भारतीय ओलम्पिक संघ का स्वरूप- संघ का चुनाव चार वर्ष में एक बार आम सभा की वार्षिक बैठक में होता है जिसमें परिषद सदस्यों को चुना जाता है जो इस प्रकार है-

एक अध्यक्ष, नौ उपाध्यक्ष, एक महासचिव, छह संयुक्त सचिव, एक कोषाध्यक्ष, राज्य ओलम्पिक संघों से 7 सदस्यों का चुनाव, राष्ट्रीय खेल फेडरेशनों/संघों से 12 सदस्यों का चुनाव।

भारतीय ओलम्पिक संघ के कार्य एवं उद्देश्य (Objectives and Functions of I.O.A)

1. ओलम्पिक आंदोलन और एमच्योर खेलों का विकास व प्रोत्साहन।
2. राष्ट्र के युवकों को प्रोत्साहित करके उनके चरित्र का विकास, अच्छा स्वास्थ्य और अच्छा नागरिक बनाना है।
3. अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति और भारतीय ओलम्पिक संघ के नियमों व अधिनियमों को लागू करना।
4. देश की जनता को खेलों का शौकीन बनाने के लिये शिक्षित करना।
5. देश में ओलम्पिक से सम्बन्धित सभी मामलों का पूर्ण और एकमात्र अधिकारिक संगठन।
6. टीम के चयन के बाद सम्बन्धित मुकाबले/प्रतियोगिता में उसकी भागीदारी का निरीक्षण एवं नियंत्रण करना।

यंगमैन क्रिश्चियन एसोसिएशन (YMCA)

भारत में YMCA की स्थापना 1910 में कलकत्ता में हुई। 1920 में हैरी क्रो

बक ने मद्रास में शारीरिक प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना की। सन् 1931 में इसे महाविद्यालय का दर्जा दिया गया। यह संगठन भारत में आधुनिक शारीरिक शिक्षा और खेलकूद का प्रथम प्रमुख संस्थान बना। सन् 1931 ई. में राजकीय शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय हैदराबाद तथा सन् 1932 ई. में राजकीय शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय कोलकाता तथा सन् 1932 में ही क्रिश्चियन कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन लखनऊ तथा सन् 1938 ई. में शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षण संस्थान कान्दीवली (मुम्बई) की स्थापना की गई। वाई.एम.सी.ए. ने भारत को खेलों तथा शारीरिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया। आज भी Y.M.C.A कॉलेज मद्रास शारीरिक शिक्षा का एक अग्रिम संस्थान है।

योगदान Contribution

प्रमुख योगदान हैं-

1. भारत में सर्वप्रथम प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षक देश को उपलब्ध कराये।
2. शारीरिक शिक्षा को वैज्ञानिक स्वरूप दिया।
3. भारत में शारीरिक शिक्षा स्कूलों में प्रारम्भ करने के लिये अपने सुझाव दिये।
4. शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में नई-नई खोजें प्रारम्भ कीं।
5. विदेशी खेलों को भारत में प्रचारित करने में सहायता की।
6. सन् 1920 में वॉलीबाल खेल को प्रारम्भ कर इसे पूरे भारत में लोकप्रिय बनाया।
7. बास्केटबाल को भारत में लाने का श्रेय YMCA को जाता है।
8. 16 फरवरी से 12 मार्च 1958 ई. में YMCA शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय मद्रास में भारत के सभी शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों की एक सभा का आयोजन किया गया। इसमें 58 संस्थाओं के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। इस सभा द्वारा दिये गये सुझावों से भारत की केन्द्रीय सरकार ने शारीरिक शिक्षा की ओर ध्यान देना शुरू किया।

लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा विश्वविद्यालय (LNIPE. Gwalior)- एल.एन.आई.पी.ई. ग्वालियर की स्थापना लक्ष्मीबाई कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन (LCPE) अगस्त 1957 में शैक्षिक एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हुई। ये जीवाजी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। महाविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर का महत्वपूर्ण केन्द्र बन जाने के कारण 1973 में इसका पुनः नामकरण कर लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शिक्षा महाविद्यालय कर दिया गया। 1982 में अपने बढ़ते हुए स्तर एवं विशेष सुविधा दिलाने के लिये इस राष्ट्रीय महाविद्यालय को जीवाजी विश्वविद्यालय का आटोनॉमस (स्वायत्तशासी) महाविद्यालय बना दिया गया। 1995 में (H.R.D.) के द्वारा इसे डीम्ड विश्वविद्यालय का नाम दिया गया क्योंकि यह संस्था शारीरिक शिक्षा, खेल एवं शोध के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त कर ली थी। 14 जनवरी 2009 में यह संस्था अपने नये नाम लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा विश्वविद्यालय (LNUPE) के नाम से जानी जाने लगी। यह विश्वविद्यालय सन् 2000 से युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत आ गया

जिसके कारण इस विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण वित्त वहन मंत्रालय ने अपने संरक्षण में ले लिया।

विश्वविद्यालय के उद्देश्य-

1. शारीरिक शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में उच्च स्तरीय, योग्य अध्यापकों को तैयार करना।
2. शारीरिक शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में नये-नये शोध करना।
3. व्यवसायिक निर्देशन एवं व्यवसाय उपलब्ध कराना।
4. शारीरिक शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करना।
5. देश में शारीरिक शिक्षा एवं खेल से सम्बन्धित कार्यक्रमों का प्रचार एवं प्रसार करना।
6. शोध के द्वारा शारीरिक शिक्षा एवं खेल से सम्बन्धित वैज्ञानिक तथा तथ्यपरक साहित्य उपलब्ध कराना।

संचालित पाठ्यक्रम

1.	बी.पी.ई.	4 वर्षीय
2.	एम.पी.ई.	2 वर्षीय
3.	एम् फिल	1 वर्षीय
4.	शोध कार्य	
5.	विभिन्न खेलों में डिप्लोमा	1 वर्षीय
6.	खेल पत्रकारिता में डिप्लोमा	1 वर्षीय

*